14.12.18 (M)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 7514 **IC**

Unique Paper Code : 12051303

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. शिल्प की दृष्टि से 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'छोटा जादूगर' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

2. 'पाजेब' बाल मन की कहानी है - विश्लेषण कीजिए।

अथवा

'तीसरी कसम' कहानी के प्रतिपाद्य का युक्तियुक्त विवेचन कीजिए। (12)

P.T.O.

munotes.in

3. 'परिंदे' कहानी की लतिका का चरित्र चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

'दोपहर का भोजन' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

4. 'जंगल जातकम' एक प्रतीकात्मक कहानी है - स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

शिल्प की दृष्टि से 'घुसपैठिए' कहानी का विश्लेषण कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) लड़ाई के समय चाँद निकल आया था. ऐसा चाँद जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है। और हवा ऐसी चल रही थी जैसी बाणभट्ट की भाषा में 'दंतवीणोपदेशाचार्य' कहलाती। वजीरा सिंह कह रहा था कि कैसे मन-मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा-दौड़ा पीछे गया था। सूबेदार, लहनासिंह से सारा हाल सुन और कागजात पाकर उसकी तुरंत बुद्धि को सराह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते।

अथवा

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आँखे तरेरती हुई बोली - कर चुके दूसरा उपाय ? जरा सुनूं कौन उपाय करोगे ? कोई खैरात दे देगा कम्मल ? न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकाने में ही नहीं

आती. मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर-मर कर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए। मैं रूपए न दूंगी- न दूंगी।

(ख) पेड़ बड़े उद्विग्न मन से सिर झुकाए तालाब की तरफ चले। वे खेमों के पास पहुंचे ही थे कि उन्हें सन्नाटे को तोड़ती हुई एक चीख सुनाई पड़ी - "बहादुरों ! यही वह बस्ती है जिसे हमें उजाड़ना है, खत्म करना है। हमें मनुष्यों के लिए मिल खड़ी करनी है, कारखाने बनाने हैं, कोयलों की खान खोदनी है। ये निहत्थे पेड़, झाड-झंखाड़ ! इनके लम्बे-चौड़े आकार से डरने की जरूरत नहीं। हमें जल्दी ही इनके वजूद को मिटा देना है...."

अथवा

शाहनी चौंक पड़ी। देर - मेरे घर में मुझे देर ! आंसुओं की भंवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पडा। मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और वह मेरे अन्न पर पले हुए ... नहीं, यह सब कुछ नहीं। ठीक है - देर हो रही है। देर हो रही है। शाहनी के कानों में जैसे यही गूँज रहा है - देर हो रही है - पर नहीं शाहनी रो-रो कर नहीं, शान से निकलेगी इस पुरखों के घर से, मान से लांघेगी यह देहरी, जिस पर एक दिन वह रानी बनकर आ खड़ी हुई थी। अपने लड़खड़ाते कदमों को संभालकर शाहनी ने दुपट्टे से आँखें पोंछी और ड्योढ़ी से बाहर हो गई।

munotes.in

(ग) गजाधर बाबू ने आहत, विस्मित दृष्टि से पत्नी को देखा। उनसे अपनी हैसियत छिपी न थी। उनकी पत्नी तंगी का अनुभव कर उसका उल्लेख करती, यह स्वाभाविक था, लेकिन उनमें सहानुभूति का पूर्ण अभाव गजाधर बाबू को बहुत खटका। उनसे यदि राय-बात हो जाती कि प्रबंध कैसे हो, तो उन्हें चिंता कम संतोष अधिक होता। लेकिन उनसे तो केवल शिकायत की जाती थी, जैसे परिवार की सब परेशानियों के लिए वही जिम्मेदार थे।

अथवा

मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों में छल-छल आंसू बहने लगे. वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वह बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आए हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान् का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की। बार-बार आँखें बंद की, मगर आँसू बरसात के पानी की पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे। आधी रात का वक्त होगा। मेहमान खाना खाकर एक-एक करके जा चुके थे। माँ दीवार से सटकर बैठी आँखें फाड़े दीवार को देखे जा रही थी। घर के वातावरण में तनाव ढीला पड़ चुका था।